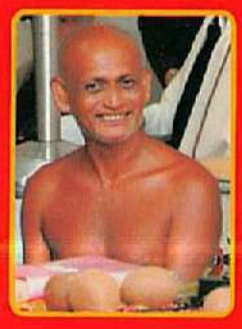

जन्म :
3 अक्टूबर 1967
विरोंधा, तहसील-धौलपुर
जिला भरतपुर(राज.)

दीक्षा :
11 अक्टूबर 1989
मिण्ड (म.प्र.)

उपाध्याय पद :
17 फरवरी 2002
विश्वास नगर दिल्ली

एलाचार्य पद :
1 अप्रैल 2009
ग्रीनपार्क दिल्ली

आचार्य पद :
3 जनवरी 2015
कुंद-कुंद भारती दिल्ली

गुरु :
प.पू. राष्ट्रसंत,
सिद्धांत चक्रवर्ती
दि. श्वेतपिच्छाचार्य
श्री 108 विद्यानंद जी
मुनिराज

''ला इलाज बिमारी शक''

संसार में जितने भी रोग हैं उन सबकी संसार में अनेक - अनेक औषधियाँ भी हैं किन्तु शक का कोई इलाज नहीं है, लक का कोई मिजाज नहीं हैं, यहाँ पर हक का रिवाज नहीं है,आत्मा में दराज नहीं है, यह पुद्गलों का ढेर तेरा स्वराज नहीं है अर्थात् रोग का इलाज हो सकता है किन्तु जो रोगी न होते हुए भी अपने आपको रोगी मान बैठे उसे निरोगी कौन कर सकता है? शक रूपी रोग का उपचार खुद के पास तो है किन्तु खुदा के पास नहीं है। लक (भाग्य) का मिजाज कोई नहीं जानता, कब किस मनुष्य के भाग्य का उदय हो जाये, भाग्य रंक को राव तथा राव को रंक भी बना सकता है। इस संसार में हमारा कुछ भी हक (अधिकार) नहीं है, हमारा हक हमारी आत्मा पर ही है अन्य पदार्थों पर नहीं है। आत्मा में कोई दरवाजा (अलमारी) नहीं है। जहाँ तुम भौतिक धन को छुपाकर ले जा सको, भौतिक धन तो यहीं छोड़ना पड़ता है। हमारा स्वराज्य आत्मा का वैभव ही है पुद्गलों का ढेर नहीं, इस राज को जानकर स्व साम्राज्य के भोगी बनो।

आचार्य वसुनंदी मुनि की
विशेष कृति मीठे प्रवचन से

SATYARTHI MEDIA 9058017645

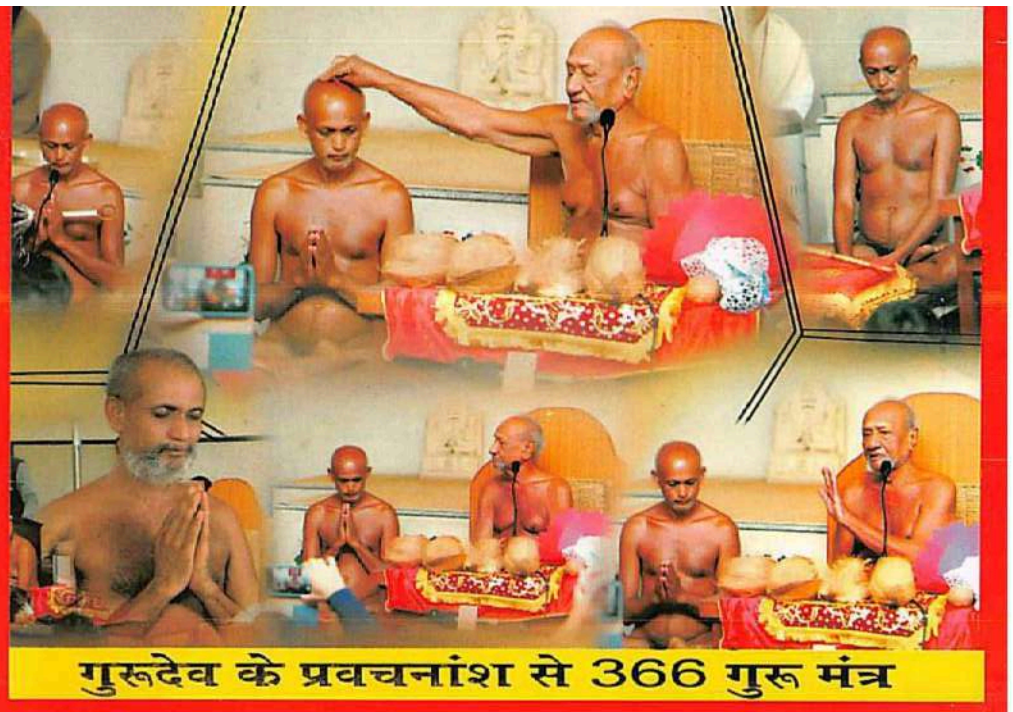

गुरूदेव के प्रवचनांश से 366 गुरू मंत्र

गुरूवर तेरा साथ

आप साथ हो तो
मुकद्दर पर हुकुमत अपनी
बिन आपके जिंदगी की
औकात ही क्या है।

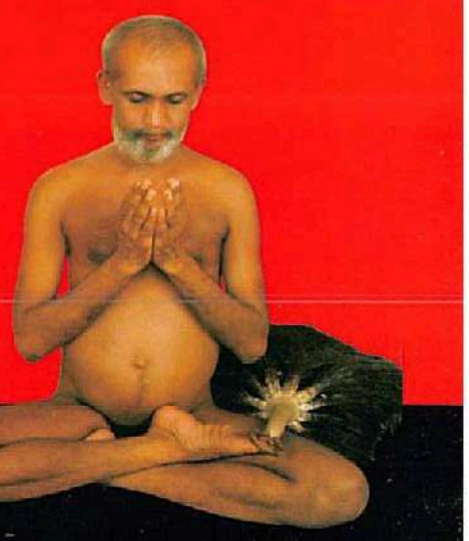

यही अंदाज मेरा जमाने को खलता है
की मेरा चिराग हवा के खिलाफ क्यों जलता हैं।

आचार्य वसुनंदी मुनि

गुरुवर तेरा साथ

आचार्य वसुनंदी मुनि

प.पू. राष्ट्रसंत, सिद्धांत चक्रवर्ती दि. श्वेतपिच्छाचार्य श्री 108 विद्यानंद जी मुनिराज के

53 वें मुनिदीक्षा दिवस के उपलक्ष्य में प्रकाशित

ग्रंथांक 52

प्रकाशकः

डी.सी. मीडीया ''निकुंज'' टूण्डला
फिरोजाबाद उ.प्र.

जनवरी से दिसम्बर

प्रथम संस्करण : सितम्बर 2015
प्रतियाँ : 2,500

गुरुवर तेरा साथ

आचार्य वसुनंदी मुनि

मंगलाशीष:

प.पू. राष्ट्रसंत, सिद्धांत चक्रवर्ती दि. श्वेतपिच्छाचार्य श्री **108** विद्यानंद जी मुनिराज

श्री सत्यार्थी मीडीया प्रकाशन
रविन्द्र भवन इन्द्रा नगर टूण्डला चौराहा
फिरोजाबाद (उत्तर प्रदेश)
मुद्रक :जैन रत्न सचिन जैन ''निकुंज''
मो. 9058017645

प्रस्तुत पुस्तक में मुद्रित समस्त सामग्री, आवरण पृष्ठ, चित्रादि के सम्बन्ध में प्रकाशक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। इसके किसी भी अंश को पूर्व में बिना लिखित अनुमति के मुद्रित करना या करवाना, कॉपीराइट नियमों का उल्लंघन होगा, जिसका सम्पूर्ण दायित्व उन्हीं का होगा और हर्जे – खर्चे के लिए स्वयं जिम्मेदार होंगे ।

रुपये 25/-

।।प्राक्कथन।।

निर्जन अटवी में भटकते हुए प्राणी के लिए यदि कोई पगदण्डी मिल जाती है तो वह उस पगदण्डी का सहारा लेकर राजमार्ग तक अथवा किसी समीपस्थ ग्राम या नगर तक पहुँच जाता है यदि पगदण्डी न मिले तो झाड़ियों से,कन्दराओं से, पर्वत की चोटियों से एवं खाईयों से घिरे हुए समाकीर्ण उस अरण्य में उसे कोई शरण नहीं होता इसी प्रकार संसार में भ्रमण करते हुए हम सभी भव्य जीवों के लिए आत्म कल्याण के निमित्त सम्यक्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र रूपी राजमार्ग यदि प्राप्त नहीं हो पा रहा है तो उसके लिए आचार्यों की वचन रूपी पगदण्डियाँ ही आत्मा के स्वरूप का बोध कराने में समर्थ होती है।

वर्तमान काल में बड़े - बड़े शास्त्र देखकर युवा पीढ़ी पढ़ने का साहस नहीं करती । छोटी - छोटी पुस्तकों में यदि आगम का सार भर दिया जाता है तो युवा,बालक, वृद्ध सभी पढ़ना चाहते हैं। बड़े - बड़े शास्त्रों में प्राकृत और संस्कृत की भाषा होती है उसमें अलंकारों की साहित्यिक भाषा होती है, बड़े - बड़े शास्त्रों में नवरस आदि की वार्तायें की जाती हैं, जिसे सुनकर, देखकर व पढ़कर युवाओं का मन चंचल होने लगता है किन्तु उन सभी शास्त्रों का सार इन सुक्तियों में ऐसे दिया है जैसे प्राचीन आचार्यों ने गूढ अर्थ युक्त सूत्रों की रचना की ।

प्रस्तुत ग्रंथ **'गुरुवर तेरा साथ'** नाम से सभी के लिए प्रकाशित है। इसमें परम पूज्य अभीक्ष्ण ज्ञानापयोगी आचार्य गुरुवर श्री 108 वसुनंदी जी मुनिराज के मुखारविन्द से निःसृत मीठे प्रवचनों के कुछ अंश सूक्तियों के रूप में संघस्थ बाल ब्रह्मचारिणी बहनें शिल्पी, साक्षी, श्रेया,लघिमा और संस्तुति ने लिपिबद्ध किये है जो वर्तमान में क्रमशः आर्यिका श्री वर्धस्व नंदिनी, वर्चस्व नंदिनी, श्रेयनंदिनी, सुरम्यनंदिनी एवं यशोनंदिनी नाम से जिनशासन की प्रभावना में संलग्न होते हुए विख्यात है।

नीतिकार कहते हैं -

पृथिव्यां त्रीणि रत्नानि, जल - मन्नं सभाषितं ।
मूढ हि पाषाण- खण्डेषु, रत्न संज्ञा विधीयते ।।

अर्थात् पृथ्वी पर तीन रत्न है १. 'मिष्ट, शीतल, स्वादिष्ट जल' जो तृषा को कम करने वाला है। दूसरा रत्न है अन्न जो क्षुधा को नष्ट करके शक्ति देने वाला है जिस शक्ति के माध्यम से संयम की साधना, परोपकार और तपाराधन किया जा सके, ऐसे, शुद्ध, सात्विक, प्रासुक अन्न को रत्न की संज्ञा दी गई है और तीसरा रत्न इस पृथ्वी पर है वह 'सुषाषित' अर्थात् मिष्ट और शिष्ट वचन, हित - मित - प्रिय वचन ! जल और अन्न तो क्षणभर की तृप्ति देने वाले हैं किन्तु 'सुषाषित वचन' इस भव और परभव में भी तृप्ति देने वाले होते हैं। इसलिए मैं स्व और पर हित के लिए परम पूज्य आचार्य गुरुवर श्री वसुनंदी जी मुनिराज का यह अमृतमयी सुषाषित रूपी रत्नों का खजाना प्रस्तुत कर रहा हूँ। यह रत्न ही नहीं 'ज्ञानामृत' है यही आत्मा का जल व भोजन भी है क्योंकि इसमें संयम की बाते छिपी है। संयम आत्मा का भोजन है, ब्रह्मचर्य आत्मा का भोग है। इसलिए यह जल व अन्न से बढ़कर सुभाषित रत्न आपको दिया जा रहा है। इसे आप प्राप्त करके समस्त दोषों से छूटकर गुणों का कोष प्राप्त करें, जीवन का होश, जोश व तोष प्राप्त करें।

यह ग्रंथ **'गुरुवर तेरा साथ'** इसमें छोटे - छोटे सूत्र हैं, अत्यन्त सरल भाषा है। उन 365 सूत्रों को यहाँ पर संकलित किया गया है। इनमें से प्रत्येक दिन एक - एक सूत्र अपने हित के लिए चिंतन में ला सकते है। यह ऐसे सूत्र है जिनको पानी की तरह पिया नहीं जा सकता अपितु मिश्री की तरह से चबाना जरूरी है, यदि इसे पानी की तरह गुटकने का प्रयास करेंगे तो आनन्द न आ सकेगा क्योंकि मिश्री का टुकड़ा - टुकड़ा यदि चबायेंगे नहीं सिर्फ गटकेंगे तो वह गले में चुभकर आनंद ना दे पाएगा। इसे तो हमें इलायची की तरह चबाना है जिससे उसका रस निकले इसे गन्ने की पंगोली की तरह चूसना है, चिंतन करके इन सूत्रों के सार को, तत्त्व को ग्रहण करना है।

यह ऐसी पगदण्डियाँ है जो हमें सिद्धालय तक पहुँचानें वाली है। इसमें निहित छोटी - छोटी सूक्ति आत्मा को कर्मो से मुक्ति दिलाने वाली है। प्रत्येक सूक्ति पर किया गया अमल हृदय को कषायों की कीचड़ से अमल (मल रहित) करके जीवन में सुख शांति देने वाला है। जैसे एक सूक्ति है - "मौन लो या मान लो" अर्थात् जीवन में सुख - शांति चाहते हो तो विवाद मत करो,

संवाद सुनो, स्याद्वाद का सहारा लो। सामने वाले की बात मान लो विवाद में मत पड़ो। यदि वह सिद्धांत के विरोधी, असत्य और धर्म का उल्लंघन करने वाली बात कह रहा है तो मौन ले लो। अथवा

✳ संसार में दुःख का कारण है "अहम् और बहम्" जो व्यक्ति अहं अर्थात् अहंकार करता है वह और जो बह अर्थात् शंकित रहता है वह दुःखी रहता है।

✳ कर्म काटने के लिए धर्म करना जरूरी है, धर्म के बिना शर्म में 'सुख' और दर्पण में 'मुख' दिखता है पर होता नहीं - दर्पण की निर्मलता होने पर ही वह अन्य पदार्थ दिखा सकता है समल दर्पण नहीं। ऐसे ही निर्मल चित्त में ही पवित्र आत्मा का चेहरा दिखाई देता है। जैसे उबलते जल में चेहरा नहीं दिखता उसी प्रकार कषाय के आवेश से युक्त चित्त वाला व्यक्ति अपनी आत्मा का अवलोकन नहीं कर सकता।

✳धर्म समीचीन जीवन की धारा है मात्र चौराहे का नारा नहीं। धर्म आत्मा के विश्वास का व्याकरण है मात्र उच्चारण की कला नहीं। धर्म भोग वासना और जीव विराधना में नहीं, धर्म तो योग साधना और प्रभु आराधना में हैं।

✳ धर्म वात्सल्य के हिमालय पर चढ़ने का नाम है, वह मदिरालय में जाने का नाम नहीं।

✳ अच्छे कपडे पहनने से कोई धर्मात्मा नहीं होता अपितु आत्मा की निर्मलता से धर्मात्मा होता है।

✳ कषाय का आवेश व्यक्ति के लिए पतन का ही कारण है क्यों कि कषाय अग्नि की तरह से है, जैसे अग्नि जहाँ जलती है वह दूसरों को भी जलाती है। अग्नि का गोला जो दूसरों पर फेंकने का प्रयास करेगा दूसरा जले या न जले, फैंकने वाला पहले जल जाता है।

✳जो मनचाहा बोलता है उसे अनचाहा सुनना पड़ता है। इस प्रकार की छोटी - छोटी सूक्तियाँ है जो उन्नतशील जीवन के लिए दिग्दर्शन कराने वाली हैं। में भावना भाता हूँ कि, इसके पाठक व श्रोता अपनी कषायों को मंद करेगा पंचेन्द्रिय के विषय से विरक्त होंगे पापों का परित्याग करेंगे, रत्नत्रय को प्राप्त करेंगे, धर्ममार्ग पर आरूढ़ होंगे, आत्मा का चिंतन, मनन एवं आत्मलीनता रूप परमात्म अवस्था को प्राप्त कर सकेंगे।

इस लघुकाय कृति में जो भी सूत्र हैं उन सभी को आ० श्री कुंद कुंद स्वामी, आ० श्री पुष्पदंत भूतबली, आ० श्री उमास्वामी के सूत्रों की तरह मानकर के यदि आप इनका चिंतन मनन करेंगे तो निःसंदेह यह सूक्तियाँ द्वादशांग के सार रूप आपके जीवन में ज्ञान की ज्योति जलाने वाली, स्वपर - प्रकाशी, संयम की उत्पादक वैराग्य संवर्द्धक होंगी ।आप इन सुक्तियों को हंसवत गुणग्राही दृष्टि बनाकर आद्योपान्त पढ़े । जल्दबाजी न करें क्योंकि जल्दी चलने वाला गिर सकता है और धीरे चलने वाला कछुए की तरह मंजिल प्राप्त कर लेता है, जल्दी चलने वाला खरगोश नहीं। अथवा जो पक्षी अपने पंखों का मूल्यांकन किए बिना ज्यादा उड़ने की कोशिश करता है वह गिर जाता है उसी तरह हमें ज्यादा नहीं पढ़ना बल्कि अच्छी तरह पढ़ना है। अच्छी तरह पढ़ना, ज्यादा पढ़ने से ज्यादा लाभदायक है। इनको पढ़कर आप अच्छाइयों को ग्रहण करें ।

इस पुस्तक के संपादन में मेरे द्वारा जो कोई त्रुटि हुई हो वह सब त्रुटि मेरी ही है, परम पूज्य गुरुदेव के उपदेश तो निर्दोष, आगम वाक्य की तरह से हैं। पाठकगण नीरक्षीर विवेक रखते हुए इनमें गुण ग्रहण कर लें और त्रुटियों के लिए मुझे अवगत कराने का कष्ट करें ।

जिन्होंने पुस्तक का प्रकाशन कराया है, अपने न्यायोपार्जित द्रव्य का सदुपयोग किया है या अन्य भी सभी सहयोगी सुधी महानुभाव श्रावकों के जीवन पथ को परम पूज्य आचार्य गुरुवर श्री वसुनंदी जी मुनिराज का मंगलमय आशीर्वाद सदैव आलौकित करता रहे । मैं भी परम पूज्य गुरुवर के श्री चरणों में आत्महितार्थ सिद्ध, श्रुत, आचार्य भक्ति सहित शत् - शत् बार नमोस्तु निवेदित करता हूँ।

पुण्यं वर्द्धताम् सवेषां मंगलं भवतु धर्मोवर्द्धताम्

स्वतन्त्रता दिवस की 68 वीं वर्षगांठ के अवसर पर
श्री शुभमिति श्रावण सुदी एकम्
श्री वी. नि. सं० 2541, 15 अगस्त 2015
वि.स. 2072, शनिवार

श्री आदिनाथ भवन, मीरा मार्ग,
मानसरोवर, जयपुर

गुरु चरणकमल चंचरीक
मुनि जिनानंद

1. जननी और जन्मभूमि से श्रेष्ठ है, चित्त के विशाल व निर्मल सिंहासन पर सम्यक्त्व, सुबोध, सदाचार, संयम, संतोष, समता व सत्य की स्थापना करना।

2. स्त्री स्वयं को तो दोषों में आच्छादित करती ही है, साथ ही दूसरों को भी दोषाच्छादित किये बिना नहीं रहतीं।

3. वासना के अंधकार में उपासना के यथार्थ चित्र दृष्टिगोचर नहीं होते।

4. आलसी मात्र वह नहीं है जो योग्य कार्य नहीं करता अपितु वह भी आलसी है जिसके अंदर योग्य कार्य के प्रति भी उत्साह नहीं है।

5. हमें पहले वे कार्य करने चाहिए जो शुभ हैं, सर्व हितकारी हैं तथा जिनमें सफलता मिलना नियामक है क्योंकि पुरुषार्थ के उपरांत मिली सफलता, अगले कार्य की प्रेरक कारण होती है।

6. समस्याऐं साहसी पुरुषों की परीक्षाऐं लेती हैं, कायरों की नहीं क्योंकि कायर परीक्षा का नाम सुनते ही भाग जाते हैं।

7. अच्छा साहित्य आदित्य (सूर्य) की तरह अंतरंग को प्रकाशित करने वाला होता है, गंदा/ अश्लील साहित्य प्याज की तरह बदबूदार व निस्सार होता है।

8. आत्मा से आत्मा का परिचय जीवन में आबाद व आजाद बनाने का साधन है किन्तु पुद्गलों में लीनता स्व को बर्बाद करने व विवाद में डालने का कारण है।

9. विषय - वासना एवं कषाय - मय प्रवृत्ति ही सबसे बड़ी पराधीनता है, अतः बुरी आदतों को छोड़ो। संयमी, अनुशासनशील, सरल परिणामी और जितेन्द्रिय बनो, यही सच्ची स्वाधीनता है।

10. व्यक्ति की प्रतिष्ठा मात्र अच्छे वचनों से नहीं अपितु अच्छे कार्यों से होती है।

11. मृत्यु से भय उन्हीं को लगता है, जिन्होंने जीवन का सदुपयोग नहीं किया।

12. परिवार का पालन और अतिथि की सेवा के लिए धन कमाना सार्थक है किन्तु धन संग्रह के लिए धन कमाना अनुचित है।

13. समय का सदुपयोग वो ही व्यक्ति कर सकता है जो धर्म के मर्म को जानता है।

14. जो अपने कर्त्तव्यों का पालन नहीं करते एवं अधिकारों का दुरुपयोग करते हैं, उन्हें नियम से तनाव होता है। उन्हें आत्म शांति भी नहीं मिलती।

15. जो व्यक्ति अंदर से कमजोर होता है, वह दूसरों पर अधिकार जमाकर स्वयं को शक्तिशाली प्रदर्शित करना चाहता है।

16. कर्तव्यनिष्ठ व्यक्ति अधिकारों की भीख नहीं माँगते अपितु ऐसे व्यक्ति अधिकारों को स्वयं खोजना चाहते हैं।

17. शब्द ज्ञान का संग्रह अहंकारी बनाता है किन्तु ब्रह्म ज्ञान विनम्र, सरल और साहसी बनाता है।

18. चिंता करना किसी समस्या का समाधान नहीं है। चिन्ता छोड़ो सम्यक् चिन्तन करो।

19. दूसरों की निंदा और आलोचना करने वाला सच्चा धर्मात्मा नहीं हो सकता। जो सच्चे धर्मात्मा होते हैं वे कभी किसी की निंदा नहीं करते।

20. जब यह समझ में आ जाये कि "पाप दुःख का कारण है" तभी से हमें उसे छोड़ने का प्रयास करना चाहिए। क्योंकि भविष्य का कोई भरोसा नहीं।

21. आत्म समर्पण का आशय यह नहीं है कि उनका सहारा लेकर मनमानी करें या उन्हें अपने अनुसार चलायें।

22. वैज्ञानिकों ने भौतिक विकास तो बहुत किया, जो कि विनाश का कारण है किन्तु वीतराग विज्ञान (आध्यात्मिक विद्या) से अछूते रह गये।

23. कई बार परिस्थितियाँ व्यक्ति को धर्म, सत्य, न्याय और ईमान के मार्ग से डिगाने के लिए मजबूर कर देती हैं किन्तु मनस्वी पुरुषों

को प्राण छोड़ना तो स्वीकृत होता है, सज्जनता का मार्ग छोड़ना नहीं ।

24. शब्द ज्ञान के द्वारा वस्तु के बारे में जानकारियाँ तो प्राप्त की जा सकती हैं किन्तु बिना साक्षात्कार के अनुभव संभव नहीं है।

25. जो व्यक्ति आलसी होते हैं उनके पास काम करने के समय का सदैव ही अभाव रहता है।

26. अच्छा व्यक्ति केवल वह नहीं जिसका चित्त अच्छा हो अपितु अच्छा व्यक्ति वही हो सकता है, जिसका चित्त और चारित्र अच्छा हो ।

27. विचारों की उत्कृष्टता और जघन्यता ही व्यक्ति के व्यक्तित्व की उत्कृष्टता और जघन्यता का कारण है।

28. वह अतीत हमें अवश्य ही याद रखना चाहिए जिससे हमें कोई प्रेरणा मिले, परिणाम निर्मल हो, चित्त प्रसन्न हो ।

29. जिनका वर्तमान, विषय - कषाय व पापों से संलिप्त है, उनका भविष्य भी तद्रूप होगा ।

30. जब अंतःकरण अशान्त, व्याकुल, क्षुभित एवं विकार युक्त होता है तब बाह्य उत्तम साधन भी उसे शांति नहीं पहुँचा सकते।

31. जो व्यक्ति वर्तमान काल में उपलब्ध साधन, सामग्री, समय, समझ व सामर्थ्य का सदुपयोग नहीं कर सकता, वह भविष्य में उन उपलब्धियों से वंचित ही रहेगा।

जिनधर्म ही प्राणी मात्र का हितकारी है।
जिनधर्म ही सर्व प्राणियों का दुःखहारी है।।
जिनधर्म ही परमात्मा बनाने का मार्ग है अनुपम।
जिनधर्म ही विश्व शांति दायक व सुखकारी है।।

1. जैसे टॉर्च का स्विच ऑन करते ही प्रकाश हो जाता है वैसे ही, श्रेष्ठ व सुखद स्मृतियों का स्मरण रूपी स्विच ऑन करते ही आनंद की अनुभूति होती है।

2. क्या आपको अपने जीवन की महत्ता का ज्ञान है? यदि नहीं है, तो आपका वस्तु सम्बन्धी समस्त ज्ञान व्यर्थ है।

3. धन कमाना बुरा नहीं है किन्तु बुरे साधनों से और बुरे कार्यों के लिए धन कमाना बुरा है तथा न्यायोपार्जित धन का भी दुरुपयोग करना बुरा है।

4. अधिकांश सम्बन्ध, भ्रांतियों के कारण टूट जाते हैं तथा कुछ साथी स्वार्थ के कारण छूट जाते हैं। जो सत्य के धरातल पर परोपकार की भावना लेकर चलते हैं, तब न उनके सम्बन्ध टूटते हैं न उनके साथी छूटते हैं।

5. दूसरों को बदलने का दुस्साहस करना और मन में बदले की भावना रखना दोनों ही स्वयं के लिए घातक हैं इससे बचने के लिए अपने आप को बदलो।

6. लाठी और पत्थरों की चोट से तो हाथ पाँव की हड्डियाँ ही टूटती हैं किन्तु शब्दों की चोट से तो दृढ़ सम्बन्ध और दिल भी टूट जाते हैं।

7. विजय की प्राप्ति सज्जनता का नियामक लक्षण नहीं है, सज्जनता का लक्षण तो परीक्षाओं के समय ईमानदार रहना है।

8. यदि आप एक अवसर चूक गए हैं तो और पश्चाताप करने में दूसरा अवसर मत गँवाईये।

9. प्रतिकूल परिस्थितियों में भी अपने कर्त्तव्यों का निष्ठा के साथ पालन करते हुए सदैव प्रसन्न चित्त रहना, प्राज्ञ पुरुषों की विशेषता का लक्षण है।

10. बाह्य पदार्थों के मध्य रहकर व अपने प्रत्येक कर्त्तव्य पालन करते हुए भी आत्मा के प्रति सतत् जागरुकता बनाये रखना महामानवता की निशानी है।

11. वर्तमान के विचार ही हमारी भावी फसल है। विचार रूपी बीज को चित्त की भूमि में वपन करने पर ही फल की प्राप्ति होती है।

12. स्वार्थ की सिद्धि हेतु असत्यता के धरातल पर निर्मित मैत्री सम्बन्ध बालू के टीले पर बने भवन के समान अविश्वस्त व क्षणध्वंसी ही जानो।

13. नेत्रों से दूसरों की अच्छी क्रियाऐं देखो, कानों से अच्छे शब्द सुनो, मन से दूसरों की सुविशेषताएँ व गुणों को देखो इसी में स्वपर का हित निहित है।

14. सत्य बात कहने, सुनने व देखने से वही व्यक्ति डरता है जिसके अंतरंग में असत्य का बदरंग भरा होता है या लोक निंदा से भयभीत है।

15. खिड़कियों में बदबू आ रही है तो यह निश्चित है कि भवन में सड़ांध है, कोई कुत्सित पदार्थ है। इसी तरह जिन नेत्रों में वासना झलकती है तो यह सुनिश्चित है कि अंतरंग में पाप भरा हुआ है।

16. सहजता, सरलता, सत्यवादिता, ईमानदारी और निर्लोभता की पराकाष्ठा व्यक्ति को निर्भीक बनाती है।

17. स्वच्छता के प्रति आकर्षण भले ही हो किन्तु हृदय में पवित्रता तो आचार, विचार, आहार व व्यवहार की शुद्धि से ही संभव है।

18. नैतिकता, गुण ग्राहकता, ईमानदारी, निर्भीकता, निस्वार्थ समर्पण, कृतज्ञता आदि ऐसे मानवीय जो गुण हैं जिन्हें हीरे, मोती व रत्न आदि से भी अधिक मूल्यवान माना जाता है क्योंकि लौकिक धन से व्यक्ति की परमार्थ की सिद्धि नहीं होती, सम्यक् गुणों से व्यक्ति परमात्म पद को भी प्राप्त कर लेता है।

19. जो व्यक्ति जीवन में कभी किसी से ईर्ष्या नहीं करता, किसी की निंदा नहीं करता किन्तु धर्म, धर्मात्मा व गुणी जनों की प्रशंसा करता है वह विश्व का सबसे भाग्यशाली पुरुष है।

20. गुणज्ञ, धर्मनिष्ठ, उदारता, वैरागी एवं प्रिय व्यक्ति परमात्मा के निकट पहुँचने वाले है किन्तु दोष ग्राही संसार सिंधु की भंवरों में डूब रहे हैं।

21.धैर्यता, नम्रता, सत्यता, उदारता, सहनशीलता एवं संयम साधना मानव को महामानव बनाने वाले गुण है, इसके विपरीत दोषों से युक्त मानव भी दानव की कोटि में गिनने योग्य माना जाता है।

22. अपशब्द, कटु शब्द, निंद्य शब्द या तुच्छ शब्द का प्रयोग करने

वाला प्राणी विवेक के स्तर से गिर चुका है, उसके पास इतनी भी समझ नहीं है कि उचित शब्दों का चयन कर सके।

23. परमात्मा के चिन्तन रूपी गुणसागर में डुबकी लगाने से विषय - वासना व पापों का संताप नहीं सताता तथा चित्त की गंदगी भी धुल जाती है।

24. जिसके प्रति हमारा पूर्ण समर्पण है और उसका भी हमारे प्रति पूर्ण वात्सल्य है तथा वह हमारा हित करने के लिए भी कृत संकल्पित है तब हमें उससे कोई याचना/ हठाग्रह करना अपने अविश्वास को ही प्रकट करना है।

25. यदि सहजता, सरलता, सत्यता, संयम, साधना, ईमानदारी और सत्यता जिसके नैसर्गिक गुण-धर्म हैं, तब परमात्म पद भी उसके लिए सरल और सहज ही मानना चाहिए।

26. जो नैतिक मूल्य गँवा चुका है मनोबल के पर्वत से च्युत है, धर्माचरण को अंधविश्वास मानता हो, भला उसे अब कौन समझा सकता है जब तक कि स्वयं न समझना चाहे?

27. नाम, मान - सम्मान व लोक - ख्याति की भावना से दिये गये करोड़ों रूपये के दान की अपेक्षा, सच्ची नवधा भक्ति से, निस्वार्थ भावना से, हृदय की पवित्रता से दान में दिये गये मुट्ठी भर चावलों का अधिक महत्व है।

28. जो परमात्म पद पाने हेतु सत्य मार्ग पर चलता है तब प्रारम्भ में प्रकृति उसकी परीक्षा लेती है, उत्तीर्णता प्राप्त कर लेने पर प्रकृति पग - पग पर आपका साथ देकर पुरस्कार एवं मंजिल रूपी प्रमाण पत्र देती है।

29.खाली दिमाग के नहीं खुले दिमाग के आदमी बनीये।

मुनिराज के चरणों में धर्म का सार मिलता है।
मुनिराज के चरणों में जीवन का आधार मिलता है।।
मुनिराज के चरण ही मोक्ष के मूल हैं मीत।
मुनिराज के चरणों में ही मोक्ष का उपहार मिलता है।।

1. निश्छल, निर्मल व निस्सीम प्रेम युक्त, निस्वार्थ मुस्कराहट आत्म संतुष्टि की प्रतीक होती है अतः सदैव हृदय की गहराईयों से अहर्निश मुस्कराते रहो।

2. अपनी योगत्रय की प्रवृत्ति देखो, फिर बताओ क्या तुम इस आचरण से खुद को परमात्मा के अंशज व वंशज कहलाने के अधिकारी हो?

3. जीवन के कक्ष में विद्यमान अवगुणों के अंधकार को नष्ट करने के लिए गुण ग्राहकता का दिव्य दीपक अंतरंग में जलाना बहुत जरूरी है।

4. विशुद्ध भावनाओं से युक्त व्यक्ति सदैव दूसरों की अच्छी विशेषताएँ व गुण देखता है किन्तु दूषित चित्त व विकार युक्त मन वाला व्यक्ति दूसरों की बुराईयाँ ही देखता है क्योंकि अच्छाईयों को देखने की दृष्टि व चश्मा उसके पास नहीं है।

5. दीर्घकाल के लिए किए गए सत् संकल्प को भी देखते रहो क्योंकि कभी -कभी वह भी शिथिल दिखायी देता है।

6. स्वयं को निर्दोष सिद्ध करने व प्रसिद्धि पाने का प्रयास क्यों करते हो? यदि आप निर्दोष हैं तो आपकी निर्दोषता की सिद्धि व आत्मप्रसिद्धि स्वतः ही हो जायेगी।

7. जो निस्वार्थ भावना से सदैव जरूरतमंद व्यक्तियों को सहयोग देता है, प्रकृति सदैव उसका सहयोग करती है तथा उसे अलग सहयोगी खोजने नहीं पड़ते।

8. सत्य निष्ठा, विवेकशीलता,निरन्तर उद्यम (शीलता) एवं सहनशीलता ही सफलता की कुंजी है।

9. जो व्यक्ति संकल्प के कच्चे होते हैं तथा अपने वायदे पूरे नहीं करते हैं, तो घनिष्ठ मित्र व स्वजन - परिजन भी उनका साथ छोड़ देते हैं।

10. "सत्य धर्म" विश्व की सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि है वह जिसकी आत्मा में विद्यमान है, वही व्यक्ति संसार का श्रेष्ठ व्यक्ति है।

11. सदा प्रसन्न रहने के लिए "यथा लब्ध संतोष एवं निंदा प्रशंसा में समभाव रखना" इन दोनों बातों को जीवन में अंगीकार करना आवश्यक है।

12. पवित्र प्रेम, निस्वार्थ उपकार व निष्कांक्ष तपस्या में कभी कोई शिकायत नहीं होती।

13. जो पुरुष मन, वचन व शरीर से दूसरों को सुखी बनाने का प्रयास करता है तब सभी प्राणी उसे सुख का देवता मानते है, उसकी यह भावना उसे अनंत सुखी बनाने में भी समर्थ होती है।

14. जो व्यक्ति स्वयं के यथार्थ स्वरूप को जानना व पाना चाहते हैं उन्हें समस्त पक्षपातों से रहित, सत्य ज्ञान का दीपक लेकर, अन्तर्मुखी यात्रा करनी पड़ेगी।

15. निज अंतरंग से निःसृत अंतर्ध्वनि कभी मिथ्या नहीं होती, वह सदैव हितकारी व यथार्थ होती है किन्तु अधिकांश प्राणी जो भौतिकता में डूबे हैं वे उस ध्वनि को न तो सुन ही पाते हैं और न ही उसका अनुपालन करते हैं।

16. यथार्थ की दृष्टि में सज्जन पुरुष वही हैं जो सज्जनता के मार्ग पर चलें, जिनका अंतरंग व बहिरंग निष्कलुषित व सरल हो । सज्जनता का मात्र उपदेश तो सज्जनता का लिबास पहनने वाला दुर्जन भी दे सकता है।

17. यदि आप अपनी आत्मा और परमात्मा की दृष्टि में अपराधी हैं, दोषी या पापी हैं तो अपनी भूल स्वीकार कर प्रायश्चित या दण्ड स्वीकार कर लो, स्वयं को निर्दोष सिद्ध करने का दुःसाहस मत करो।

18. कोई भी अपराधी/ पापी प्राणी कदाचित् दुनियाँ की नजरों में स्वयं को निर्दोष सिद्ध भले ही कर ले किन्तु वह खुद व खुदा या परमात्मा की दृष्टि में सदोष ही है । जब वह स्वयं के पापों को निहारेगा तब स्वयं को क्षमा न कर पायेगा तथा दुनियाँ को उसके कृत्य से अवश्य ही घृणा होगी ।

19. शंकालु व्यक्ति मंजिल तक नहीं पहुँचता है इतना ही नहीं अपितु संशयात्मा विनष्ट भी हो जाता है क्योंकि संदिग्धता का जीवन अशांति और व्याकुलता का जीवन ही होता है।

20. भूतकाल को भूत की तरह छोड़ दो, भूतकाल की भूलों को भूल जाओ, उन्हें साथ बांधकर मत चलो तथा भूलकर भी भूत की भूलों को मत दोहराओ ।

21. भविष्य के लिए अभी से इतना व्याकुल होने की क्या आवश्यकता है भविष्य में सुखी होने की चिंता में वर्तमान का सुख

क्यों खो रहे हो?

22. अपने सहज स्वरूप में रहिये, कुछ बनने का स्वांग न रचो क्योंकि, यह रचांग आपको सहजता की अपेक्षा अधिक दुःखकारी सिद्ध होगा।

23. यदि संकल्प और उनको पूर्ण करने के साधन शुद्ध हैं तो आप जो सोचते हैं वह कहना और जो कहते हैं उसे क्रियान्वित करना बड़ा सरल हो जायेगा।

24. यदि आपकी दृष्टि निर्मल, उच्च, उदार, सत्य से अनुस्यूत है तो आपका मस्तक या नेत्र कभी, लज्जा या हीनता से झुकेंगे नहीं अपितु गौरव से ऊँचे हो जायेंगे।

25. कुछ लोग कहते हैं कि, "जो विजयी हुआ है वही सत्यार्थी है" किन्तु, हमारा मानना यह है कि जो सत्यार्थी था वही आज विजयी हुआ है, यह बात अलग है कि विजयी होने पर वह सत्यार्थी ही रहेगा या असत्यार्थी।

26. यदि आपसे कोई नाराज है और आपको नाना मिथ्यादोष लगा रहा है, तब आप उत्तेजित होने की बजाय धैर्यता से काम लें, कुछ समय बाद सत्य स्वतः ही प्रकट हो जायेगा।

27. महापुरुष अपनी निंदा व अपमान सुन कर के भी निंदकों के प्रति सद्भावनाओं की पुष्पवृष्टि करते हुए मुस्कराते ही रहते हैं, दुःखी या

उत्तेजित नहीं होते।

28. उत्साही व्यक्ति बड़े - बड़े कार्य भी सहजता में सम्पन्न कर लेते हैं किन्तु निरुत्साही व्यक्ति शीघ्र ही थक जाते हैं अतः उनकी (उत्साहियों की) मंजिल सदैव सहज साध्य ही रहती है।

29. यदि आप दूसरों की कमजोरियाँ अपने मन में रखते हैं तब कालान्तर में वे कमजोरियाँ आप पर हावी भी हो सकती हैं और आपकी अच्छाईयों का क्षण भक्षण भी कर सकती हैं।

30. यदि हम ईमानदारी पूर्वक परमात्मा को अपना साथी बनालें तो हमारे चेहरे पर कभी चिंता की रेखाऐं नहीं दिखेंगी।

31. भ्रांतियाँ जीवन को बर्बादी के तट पर ले जाकर खड़ा कर देती हैं, अतः प्रेम पूर्ण विचार, निर्मल भाव एवं सही समय पर कार्य करके विवेक से उन भ्रांतियों को दूर कीजिए।

मुनिराज के चरणों में धर्म का सार मिलता है।
मुनिराज के चरणों में जीवन का आधार मिलता है।।
मुनिराज के चरण ही मोक्ष के मूल हैं मीता।
मुनिराज के चरणों में ही मोक्ष का उपहार मिलता है।।

अप्रैल

1. यदि चलते समय पैर फिसल जाये तो एक ही व्यक्ति घायल होता है, किन्तु जुबान(जीभ) फिसल जाये तो अनेक का घायल होना या मृत्यु को प्राप्त होना भी संभव है।

2. सुन्दर, गुणी, ज्ञानी एवं धनी व्यक्ति की ओर प्रायः सभी आकर्षित होते हैं, उनकी सहायता भी करते हैं किन्तु कुरूप, अवगुणी, अयोग्य, मूर्ख, निर्धन की सहायता करने वाले यहाँ कितने हैं?

3. यह नेत्र जब तक खुले हैं तब तक प्राणी मात्र के लिए प्रेम, शांति, सांत्वना व खुशी देने का प्रयास करो, नेत्र बंद होने पर कुछ भी न दे सकोगे।

4. अपने जीवन को भार भूत बनाने की अपेक्षा उसे सारभूत और दूसरों का आधार (भूत) बना लेना महापुरुषों की विशेषता है।

5. एक व्यक्ति का तीव्र लोभ हजारों को दुःखी कर सकता है तथा एक व्यक्ति की उदारता, त्याग व सद्भाव लाखों के कल्याण में समर्थ है। तुम कैसे व्यक्ति बनना चाहते हो?

6. हर व्यक्ति के विचार और प्रवृत्ति में भिन्नता होती है किन्तु स्नेह, व्यवहार, सहयोग की भावना तथा प्रकृति में भिन्नता नहीं होनी चाहिए।

7. जिस बात के सुनने से आपकी विशुद्धि एवं खुशी नष्ट हो, संक्लेशता, आर्त्त - रौद्र ध्यान बने उस बात को कभी मत सुनो।

8. यदि हम भविष्य के बारे में अत्यंत चिन्तित व भयभीत रहेंगे तो वर्तमान के स्वर्णिम अवसर भी खो देगें।

9. अच्छे मित्रों का साथ दुःख से, बुराईयों से बचाकर सुख की राह पर एवं सच्चाई के मार्ग पर ले जाता है अतः सदैव अच्छे मित्र बनाओ।

10. यदि आपने अपना जीवन महत्वपूर्ण जाना व समझा है तब संभव है कि दूसरे आपके जीवन को महत्वपूर्ण मानेंगे।

11. किसी दूसरे व्यक्ति को विपत्ति में डालना एवं दुःखी व्यक्ति को

देख कर हँसना, खुद के लिए विपत्तियों को आमंत्रण देना है तथा अज्ञानता प्रदर्शित करना है।

12. दूसरों को गिराने वाला व्यक्ति स्वयं ही गिर जाता है। अतः किसी गिरते को उठाने का प्रयास करो, तब संभव है, तुम्हारा भी उत्थान हो जाये।

13. दूसरों की सहन करना एक बात है, उनको उन गलतियों या बुराईयों से बचा देना तथा उन्हें क्षमा कर देना उससे भी बड़ी बात है।

14. प्रभु परमात्मा की स्मृति, स्तुति, भक्ति, वंदना हमारी आत्म शक्ति की विकासक, अंतरंग ज्ञान की प्रकाशक एवं समस्त दुःखों की विनाशक है।

15. यदि आपको देखकर कोई हँस रहा है तब भी आप खेद खिन्न न हों अपितु अपनी गलती सुधार लें तथा यह सोचें कि आप किसी की खुशी में निमित्त तो हैं।

16. यदि आप सदैव प्रसन्नचित्त रहना चाहतें हैं तो अपनी तथा दूसरों की अच्छाईयों को देखें, अच्छाईयों की चर्चा व प्रशंसा करें।

17. अपना बचाव करने के लिए दूसरों पर दोषारोपण न करें क्योंकि समय सत्य को प्रकट करने के लिए सदैव तत्पर है।

18. आदर्श जीवन वह नहीं है जो किसी के लिए समस्या या भार रूप

है, अपितु श्रेष्ठ जीवन तो वह है जो समाधान रूप, सार तथा वरदान रूप हो।

19. उन्नति की दृष्टि रखो, किसी का पतन मत सोचो, दूसरों को पतित करने वाला खुद भी पतित ही हो जाता है।

20. साधु सेवा, परोपकार एवं धार्मिक कार्य करने से मानव का सौन्दर्य प्रकट होता है तथा गुणों को ग्रहण करने से वह विभूषित होता है।

21. स्वयं को ज्ञाता - दृष्टा बनाओ, तब आपको अनुपम सुख की अनुभूति होगी, कर्ता - धर्ता, भोक्ता - प्रदाता बनने से दुःख ही दुःख पाओगे।

22. जैसा लक्ष्य लेकर बढ़ोगे, जीवन में वैसे ही लक्षण प्रकट होंगे, अग्नि की समीपता "ऊष्णता" व जल की समीपता "शीतलता" का अनुभव कराती है।

23. सत्य को सांसारिक आतंक डरा नहीं सकते और न ही उसे असत्य के बादल हमेशा के लिए ढक सकते हैं।

24. महापुरुषों की शुभ करनी व शुभ कथनी एक रूप होती है, अधर्म पुरुषों की इससे विपरीत।

25. तुम्हारे सुनने से, सुनाने से, चिन्तन करने से यदि तुम्हारी या दूसरों की भावनाऐं बिगड़ती हैं तो इससे भी वायुमण्डल दूषित ही होगा ।

26. आप अपने साथियों व मित्रों के गुणों की व विशेषताओं की चर्चा करो, बुराईयों की नहीं ।

27. जब आपको कहीं भी आश्रय दिखाई नहीं दे रहा हो, जीवन में चारों तरफ निराशा दिखाई दे रही हो, पाप कर्म का तीव्र उदय हो, तब धर्म का मार्ग व प्रभु परमात्मा का द्वार खुला रहता हैं।

28. जो काम बेमन से किया जाता है, वह बहुत कठिन लगता है, उसमें सफलता की संभावना भी कम ही होती है तथा उसमें समय भी अधिक लगता है।

29. यदि मन, वचन, काय, धन एवं बंधु बांधवों की पूरी शक्ति लगा देने पर भी सफलता की संभावना कम ही दिखती हो तब उस कार्य को छोड़ देना ही बुद्धिमानी है।

30. आप यथार्थ मूल्यांकन करने का प्रयास करो, तब आपको न कोई धोखा दे सकेगा और न ही अपमान कर सकेगा ।

मई

1. जो कभी भविष्य था वह आज वर्तमान बन गया,जो कभी वर्तमान था वह अतीत बन चुका है, जो वर्तमान बनेगा वह नियमित अतीत बनेगा ही, अतः जो अतीत बने ऐसे भविष्य की चिंता क्यों?

2. आने वाला प्रत्येक दिन एक नई आशा, रहस्य व विश्वास लेकर आता है तथा जाने वाला प्रत्येक दिन सफलता देकर जाता है किन्तु किसे क्या मिला वह उसके पुरुषार्थ व भाग्य की बात है।

3. यदि आप अपने पुरुषार्थ का फल समय के पहले चाहते हो तो तुम्हें कच्चे, खट्टे व कड़वे फलों में संतोष करना पड़ेगा, अगर तुम्हें यह मंजूर नहीं है, तो पुरुषार्थ करते रहो और शांति पूर्वक फल की प्रतीक्षा करो।

4. हमारी उदारता ही हमें उदारता पूर्वक फल देने वाली होती है। आकाश सब द्रव्यों को उदारता से स्थान देता है इसलिए ही तो उसकी सत्ता सर्वत्र है।

5. जो जल की तरह सब वस्तुओं को स्थान देता है वह जल की तरह सब जगह स्थान पा सकता है जो दूसरों को स्थान नहीं दे सकता वह कहीं भी स्थान नहीं पा सकता है।

6. यदि आप आत्मिक शांति चाहते हो तो हृदय में पवित्रतम अमृत कुण्ड में कूड़ा - कचरा व गंदगी रूपी कुविचार मत डालो।

7. ईमानदार व्यक्ति स्वयं भी संतुष्ट रहता है तथा दूसरे भी उसमें संतुष्ट रहते हैं, क्योंकि वह बिना पुरुषार्थ के कोई फल नहीं चाहता, तथा परिश्रम से अधिक पा सकने पर भी वह दूसरे का हिस्सा नहीं चाहता।

8. जो पूर्ण निष्ठा,लगन तथा विवेक के साथ अपने सुकार्य में संलग्न रहते हैं तब आत्म विश्वास की छाप उन कार्यों को महत्वपूर्ण बना देती है।

9. जिन घावों को भरने में डॉ. (वैद्य) की औषधि भी समर्थ नहीं होती, समय की मरहम से वह ठीक हो जाते हैं।

10. यदि आप सामने वाले को यह विश्वास दिलाना चाहते हैं कि आप वह हैं जो आप वास्तव में हैं नहीं, तब आप ही सोचो मूर्ख कौन बना,

सामने वाला या आप?

11. जो प्रत्येक वस्तु के यथार्थ मूल्यांकन व सम्यक् उपयोग करने में समर्थ है वही व्यक्ति स्वतंत्र है, अन्यथा नाम का स्वतंत्र तो कोई भी हो सकता है। जैसे किसी का नाम गुलाम तो किसी का स्वतंत्र।

12. मौन से मस्तिष्क को आराम मिलता है, मस्तिष्क की विश्रांति शरीर में भी स्फूर्ति भरने वाली होती है, अतः हे आत्मन्- मौन साधना अधिक करो।

13. मौन की शक्ति अचिन्त्य है, मौन की आध्यात्मिक साधना मन के मोबाईल को चार्ज करने वाली बैटरी ही है, बोलो, है ना।

14. नींद व विश्रांति शरीर में नव ऊर्जा शक्ति का संचार करने वाली प्रक्रिया है, अतः आवश्यक नींद तथा विश्राम करना हर श्रमण को भी आवश्यक है।

15. संक्लेशता के गर्त व चिंताओं के दल - दल में फँसा व्यक्ति जीवन में भावना से अशुभ ध्यान का शिकार ही बनता रहता है। अतः सदा प्रसन्न चित्त रहो।

16. अच्छी पुस्तकें अच्छे मित्रों की तरह हमारे परिणामों (भावों) की सुरक्षा करती है। अतः सदैव अच्छा साहित्य ही पढ़ना चाहिए।

17. जो व्यक्ति दूसरों के साथ अपनी तुलना करता है, वह अवश्य

ही अहंकार या दीनता का शिकार बनता है।

18. जिस आम्रफल से खट्टी गंध आ रही है तो समझो, वह आम का फल भी खट्टा ही है, इस तरह जिस व्यक्ति के वचन, कर्कश, कठोर व सावद्य युक्त हैं तो समझो, उसका मन भी वैसा ही है।

19. ज्ञान वह दिव्य अस्त्र है जिसके द्वारा चेतन के समग्र गुण रूपी धन की रक्षा हो सकती है।

20. राजा के पास सैन्य शक्ति है तो मुनिराज के पास होती है विश्व की श्रेष्ठतम शक्ति जिसका नाम है - संयम का पालन करना।

21. जो अल्प बुद्धि का धारक होते हुए भी अपने आप को अहंकार युक्त हो, ज्ञानी मानता है वह अज्ञानी ही है।

22. बुद्धिमान वह कहलाता है जो कार्य प्रारंभ के पूर्व सोचता है तथा अज्ञानी वह है जो कार्य के अंत में सोचता है।

23. विद्वान सदैव खुद को विद्यार्थी समझता है मूर्ख सदैव खुद को समझता है महापंडित।

24. यदि जीवन विकास की सर्वोच्चतम चोटी प्राप्त करना चाहते हो तो अवसर का लाभ उठाओ और आगे बढ़ो, किसी की इंतजारी मत करो।

25. संयमित, संतुलित एवं संतुष्टि का जीवन जीने वाला अनुपम आनंद का उपभोक्ता होता है।

26. ऐसे लोग सर्वाधिक हैं जो आदर्श जीवन की बात कहते हैं, उनसे कम वह हैं जो कहते भी हैं तथा वैसा जीवन जीते भी हैं किन्तु सबसे कम जीव वे हैं जो आदर्श जीवन जीते हैं तथा आश्रित जनों को शब्दों से नहीं चर्या से उपदेश देते हैं।

27. आशा का मार्ग सर्वोच्च सफलता के चरम तक जाता है। जो उसे छोड़ देते हैं वे उस परम चर्म को नहीं पा सकते।

28. जो अपने दोष छिपाते हैं, लोग उस पर कीचड़ उछालते हैं, जो दोष दिखाते हैं लोग उन्हें सिर झुकाते हैं।

29. यदि कोई आपको मूर्ख समझता है तो समझने दो, तुम वही रहो जो तुम वास्तव में हो।

30. संतुलित मन का आशय यह है कि अनुकूल व प्रतिकूल स्थिति में भी मन की तुला सम रहे।

31. विघ्नों से डर कर हिम्मत मत हारिए, हौंसले बुलंद रखिए, अपनी पतवार संभार कर जीवन नाव को उबारिये।

जून

1. महान व्यक्ति वह है जिसे देखकर जमाना बदल जाये, अशुभ को शुभ की धार में जो बहाकर ले जाये। अधम पुरुष वह है जिसे कोई भी परिस्थिति शुभ से अशुभ में बदल दे।

2. आत्म नियंत्रण से, निखिल को नियंत्रित करने की निस्सीम शक्ति की प्राप्ति होती है।

3. सच्चे अर्थों में स्वतंत्र वही है जिसे हिंसा करने को या झूठ बोलने को कभी मजबूर न होना पड़े तथा जिसे अपने किसी कृत्य को छुपाना न पड़े।

4. जो अंतस में संतुष्टि के सर्वोच्च शिखर पर पहुँच चुके हैं, संसार का कोई भी चेतन व अचेतन परिग्रह उनके मन को राग रंजित नहीं कर सकता।

5. निर्बल, शंकित व भीरू मन कभी सुदृढ़ संकल्प स्वीकार नहीं कर सकता, वह सदैव अपने को बचाने व छुपाने की जुगाड़ में ही लगा रहता है।

6. आज संसार में अच्छे वक्ताओं की नहीं अपितु अच्छे प्रभोक्ताओं की कमी है।

7. जिस प्रकार दर्पण में मानव अपना चेहरा देख सकता है, उसी तरह आप भी ऐसे निर्मल चारित्र रूपी दर्पण के धारी बनें कि लोग आपके चारित्र रूपी आदर्श में अपना जीवन देख सकें।

8. जिस प्राणी को अपने ईश, धर्म तथा कर्तव्य पालन में जितनी अधिक हठतम निष्ठा होती है, वह व्यक्ति उतना ही निर्भीक व आत्मबली होता है।

9. जीवन की सबसे बड़ी समस्या से बचने के लिए व्यक्ति मृत्यु को चुनता है, किन्तु मृत्यु से बच न पाना ही जीवन की सबसे बड़ी समस्या है और उस मृत्यु रूपी प्रश्न का (समस्या का) उत्तर है "जीवन"।

10. आपके जो मित्र गिरगिट की तरह क्षण - क्षण में बदलते रहते हैं

उनसे सावधान रहो क्योंकि वे आपको अपने कर्त्तव्य से भी च्युत कर सकते हैं।

11. एक आलसी व्यक्ति अपने आलस में इतना व्यस्त रहता है कि जीवन में दूसरा काम करने के लिए भी उसके पास समय नहीं होता।

12. जो व्यक्ति अपने आपको अच्छी तरह समझ लेता है वही व्यक्ति अपने योग्य मित्र की खोज करने में भी समर्थ हो पाता है।

13. जिस प्रकार छोटी सी टॉर्च बहुत बड़े अंधकार से भी आपको मंजिल तक पहुँचा देती है उसी प्रकार आपका थोड़ा सा साहस भी जीवन की बड़ी से बड़ी विपत्ति में भी मंजिल के लिए प्रेरक निमित्त होता है।

14. सत्य के धरातल पर जीने वाला पूर्ण ईमानदार व्यक्ति कभी अनजान व्यक्ति या संकट से भयभीत नहीं होता।

15. पूर्ण परिपक्वता उसी प्राणी में आती है जो फल की तरफ लू व आंधी के थपेड़ों को सहन करता हुआ भी अंदर व बाहर से अपना मार्ग या स्थान नहीं छोड़ता है।

16. जो जिम्मेदारी लेने से भयभीत हैं या कर्तव्य पालन में शिथिल हैं वे जीवन में पूर्णता को कभी प्राप्त नहीं कर सकते।

17. यदि आप दूसरों के कर्त्तव्य पालन कराने में निरन्तर चिन्ता मग्न

व जागरूक हैं तो मान लीजिए आप अपने कर्तव्य रूपी व्यापार का दिवालिया निकाल देंगे।

18. यद्यपि आप समय को परिवर्तित नहीं कर सकते, किन्तु जब आप उत्साह व साहस से परिपूरित हों तब सदैव यही मानें की अब परिवर्तन का समय हमारे सामने उपस्थित है।

19. यदि आपके दिल में ईश्वर की तस्वीर व सच्चा प्रेम/समर्पण विद्यमान है, तो जीवन में कभी आपको दिल का दौरा नहीं पड़ेगा।

20. परीक्षा की घड़ी व्यक्ति का शौर्य, गुण व व्यक्तित्व को परखने की कसौटी है।

21.दुनियाँ के विरोध की परवाह किये बिना आप सच्चाई के मार्ग में अडिग रहिये, क्योंकि दुनियाँ एक हद तक आप का विरोध करेगी (परीक्षा लेगी) जैसा कि आज तक होता आया है और आगे भी होता रहेगा फिर वह तुम्हारे चरणों में नत मस्तक हो जायेगी।

22.अपनी कमजोरियाँ या मजबूरियाँ दूसरों को मत बताओ, क्योंकि ऐसा करने से वह दूर नहीं हो सकेंगी। हो सकता है और बढ़ जायें। यदि तुम उन्हें दूर रखने का संकल्प ले लो तो वे चिरकाल तक टिक नहीं सकेगीं।

23.जो महानुभाव अपने कर्त्तव्य का आत्म साक्षी में या प्रभु परमात्मा की साक्षी में ईमानदारी से पालन करता है, वही अपने अधिकारों के

लिए लड़ने का अधिकारी है।

24.वाहन चालक जितना सावधान अंधे मोड़ में आते ही हो जाता है उससे भी अधिक सावधान हमें जीवन के प्रत्येक मोड़ पर रहना चाहिए क्योंकि जीवन का प्रत्येक मोड़ अंधा मोड़ है और अनेक मोड़ से युक्त रास्तों पर गुजरना ही जिन्दगी है।

25.जो जीवन के हर मोड़ पर सावधान रहता है उसके जीवन में कोई भी खतरनाक दुर्घटनाऐं नहीं होती कदाचित् कोई अनायास ही उससे आकर टकरा जाये तो भी उस दुर्घटना में उसकी क्षति अधिक नहीं होती अतः सावधान होकर ही चलना चाहिए।

26. परिवर्तन दो प्रकार का होता है एक उन्नति कारक दूसरा अवनति कारक। हम अवनति - कारक परिवर्तन के विरोधी भले ही रहें किन्तु उन्नति - कारक परिवर्तन के विरोधी नहीं बनना चाहिए।

27. यदि कोई व्यक्ति बहुत अधिक साधनों पर या व्यक्तियों पर निर्भर रहता है, तो उसे उतने ही गुलामी के बंधनों को स्वीकार करना पड़ता है।

28. अतीत का फल वर्तमान है तथा वर्तमान भविष्य का बीज है, बीज जैसा होगा उसका फल भी वैसा ही होगा।

29. आप सत्य के साथ रहिये, संघर्षों का सामना कीजिए, जमाने की परवाह मत कीजिए, जब आप संघर्ष की अग्नि से कुंदन बनकर

निकलोगे तब दुनियाँ आपके चरणों की धूल पाने के लिए तरसेगी।

30. मेरी समस्याऐं कम हो जाऐं भगवान से ऐसी प्रार्थना छोटे दिल वाले ही करते हैं, उदार चित्त वाले तो अपनी सहन शक्ति को वृद्धिंगत करने का ही प्रयत्न करते हैं।

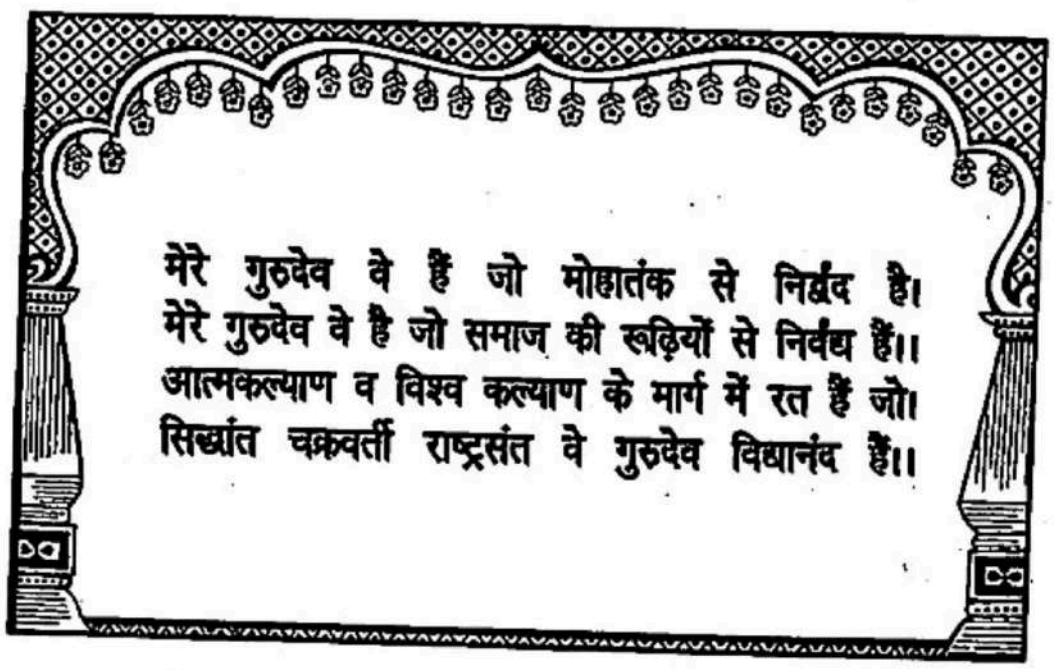

1. मेरे भगवान ही मेरे पिता, माता, भाई, बंधु, सखा, गुरु व साथी हैं वही मेरे सब कुछ हैं। उन्हें छोड़कर मुझे संसार का कोई भी रिश्ता नाता नहीं चाहिए।

2. जो जितना अधिक भयभीत रहता है, वह उतना ही अधिक मायाचारी, पापी, व्यसनी व खतरनाक है।

3. दूसरों पर मिथ्यादोष लगाना, अत्याचार करना, दुर्व्यवहार करना, निंदा करना, धर्मात्मा की अवमानना करना स्वयं को पापी, धोखेबाज, व्यसनी, कायर पुरुष, दुर्गतिगामी होने का प्रमाण देना है।

4. मायाचारी से युक्त होकर प्रार्थना करने की अपेक्षा प्रेम युक्त, निश्छल मन से (हितकारी) आदेश देना ज्यादा अच्छा है, क्योंकि विष युक्त चासनी की अपेक्षा रोग परिहारक कटुक औषधि ही अच्छी मानी जाती है।

5. जो व्यक्ति अपने आलेख में अल्प विश्राम या पूर्ण विराम का यथोचित ध्यान रखता है, वह विद्वान माना जाता है किन्तु उससे अधिक ज्ञानी पुरुष वह है जो अपनी बुराईयों पर अल्प विराम या पूर्ण विराम लगाने में समर्थ है।

6. जहाँ प्रेम का निर्मल जल नहीं है वहाँ शीतलता रूपी शांति असंभव है जहाँ हृदय में परिपक्वता नहीं है वहाँ निश्छल प्रेम प्रकट नहीं होता।

7. आपकी नियंत्रण-शक्ति सम्यक् हो, जो उत्तेजित न होने दे, न दीन बनने दे, न अहंकार से परिपूर्ण करे और न ही बैर की गांठ बनने दे।

8. जीवन की प्रत्येक असफलता आपको सफलता की प्रेरणा देने वाला निमित्त बन सकती है यदि आप बनाना चाहें तो।

9. यदि मन में दृढ़ निश्चय व विश्वास है तो सफलता आपके हाथ में है तथा इसके विपरीत अगर आप संकल्प में शिथिल हैं तो आपकी पराजय को कौन टाल सकता है?

10. जिस कार्य का प्रतिफल अच्छा व बड़ा है, वह कार्य कितना भी छोटा क्यों न हो किन्तु फिर भी वह कार्य बड़ा ही होता है तथा जिसका प्रतिफल अत्यल्प ही है तो वह बड़ा कार्य भी लघु माना जाता है।

11. हम जैसी भावना भाते हैं,कालान्तर में वैसे ही बन जाते हैं । अतः हमें अब वैसी ही भावना भाना चाहिए, जैसा हम बनना चाहते हैं।

12. "खुदा" वही है जो समस्त कर्म बंधनों से खुला है तथा "बन्दा" वही है जो कर्मों के बंधन में बंधा है।

13. धन सम्पत्ति, बाह्य वैभव, कुटुम्ब परिवार तो पापी भी प्राप्त कर सकता है किन्तु सम्यक्ज्ञान पुण्यवान् ही पाता है, पापी नहीं ।

14. संसार की जिस वस्तु पर आप अपना अधिकार जमाते हैं तो वह वस्तु सुख के बजाय दुःख का कारण ही बन जाती है।

15. आधि, व्याधि व उपाधि से रहित संयमी जन ही समाधि को प्राप्त कर सकते हैं।

16. मन की गति जब आत्म हित में प्रवृत्त होती है तब परिणामों की विशुद्धि होती है तथा परिणामों की विशुद्धि ही मनः समाधि का कारण है।

17. यदि हम नित्य एक घड़ी मात्र के लिए भी अपनी मृत्यु का ध्यान या चिन्तन करें, तो हम निश्चित ही सम्पूर्ण पापों से मुक्त हो जायेंगे ।

18. युवावस्था में (विवेकहीनता से) भोगा गया इन्द्रिय सुख, वृद्ध अवस्था में दुःख और निराशा का कारण होता है।

19. जीवन में किसी भी असफलता को असफलता मानना ही असफलता की सूचक है, आशावादी दृष्टिकोण वाले महानुभाव तो असफलता को किसी विशिष्ट सफलता की जननी मानते हैं।

20. जिसे कोई मनुष्य तो क्या, मौत भी नहीं छीन सके, वही सच्ची सम्पत्ति है।

21. महापुरुष अपनी प्रशंसा सुनकर और अधिक विनम्र हो जाते हैं जबकि मूर्ख और अधिक उद्दण्डी।

22. यदि आप प्रशंसनीय बनना चाहते हैं तो पहले प्रशंसक बनना चाहिए, निंदक तो निंदनीय हो जाता है।

23. जब दृष्टि मिथ्यादोष से ग्रसित होती है तब पदार्थ भी मिथ्या प्रतिभासित होते हैं और मिथ्या पदार्थ सम्यक् प्रतीत होते हैं।

24. अज्ञानी पुरुष आँखों में काजल/ कालिमा के द्वारा सुन्दर बनना चाहते हैं, किन्तु ज्ञानी पुरुष कालिमा धोकर सुन्दर बनते हैं।

25. प्रशंसनीय व्यक्ति सम्मानीय, वंदनीय व आदरणीय पुरुष होता है, किन्तु उसका प्रशंसक लोक पूज्य, विश्ववंद्य, सर्वप्रिय एवं महापुरुष ही होगा।

26. यह अपनी - अपनी दृष्टि का फेर है कि हमें दुनियाँ में कोई बुरा व्यक्ति नहीं मिला और तुम्हें दुनियाँ में कोई अच्छा व्यक्ति नहीं मिला, दुनियाँ तो जैसी है वैसी ही है किन्तु, जिसकी जैसी दृष्टि होती है उसे वैसा ही दिखायी देता है।

27. यदि आप समर्थ पुरुष बनना चाहते हैं तो अपने से पूज्य पुरुषों के सामने असमर्थ बन जाइये, प्रभु बनना चाहते हो तो अपने प्रभु के सच्चे किंकर बन जाओ, विभु बनना चाहते हो तो अपने इष्ट आराध्य देव के चरणों में भिक्षुक बन कर रहो।

28. एक सच्चे साधक को अपनी आत्मा की नित्य ही समीक्षा व समालोचना करना चाहिए, जिससे उसकी आत्मा दोष मुक्त हो जाये।

29. निर्धनता एक अनुपम कसौटी है जिस पर हितैषी-विद्वेषी, धर्मात्मा -अधर्मी एवं पुरुषार्थी व भाग्यहीन की परीक्षा हो जाती है।

30. जो प्रचुर धन को प्राप्त करने पर भी उसका सदुपयोग या भोगोपभोग नहीं करते हैं, वे तो निर्धन हैं ही साथ में वे भी निर्धन ही हैं जो अज्ञान अंधकार में भटक रहे हैं।

31. निर्धन मात्र वे पुरुष नहीं हैं जो पुद्गल पिण्ड स्वरूप धन से रहित हैं, अपितु वे भी निर्धन हैं, जो चेतना के स्वाभाविक गुणों से रहित संसार अटवी में भटक रहे हैं।

अगस्त

1. अपने गुणों के प्रति अहंकार, दूसरे के दोषों का प्रकाशन या निंदा करना हमारी निर्धनता की द्योतक है।

2. जिस घर से अतिथि प्रसन्न होकर जाता है तो वह घर शीघ्र ही अपरिमित वैभव व ऐश्वर्य से परिपूर्ण हो जाता है किन्तु दान के पीछे तुम्हारा कोई लौकिक स्वार्थ व आकांक्षा न हो।

3. अपनी सोच सदैव सकारात्मक बनाकर ही रखिये, जिससे अपनी मंजिल को पा सको। नकारात्मक सोचने वाले का सम्पूर्ण जीवन ही निराशामय बन जाता है।

4. सच्चा साधक ऐसा कोई कार्य नहीं करता जिसे छिपाने की आवश्यकता हो । अर्थात् वह लोक निंद्य कार्य, वचन व विचारों से बचकर चलता है।

5. किसी व्यक्ति के कान में भी ऐसी बात मत कहो जो सभा में प्रकट होने पर आपके व्यक्तित्व के प्रति शंका पैदा करने वाली हो अर्थात् आपकी नजर कहीं नीची न हो जाये ।

6. व्यक्ति की नजर बदलते ही दुनियाँ के नजारे बदल जाते हैं, अतः दुनियाँ के नजारों में इतने मस्त न हो कि दूसरों की नजरों से ही गिर जाओ ।

7. किसी भी समय किसी भी अपराध को खुद और खुदा से छिपाने का प्रयास मत करो अन्यथा तुम खुद और खुदा की दृष्टि में गिर जाओगे । अपराध को तो छिपा ही नहीं सकते ।

8. वास्तविक सम्पन्न, स्वस्थ व ज्ञानी व्यक्ति प्रत्येक जीव को सम्पन्न, स्वस्थ व ज्ञानी देखना चाहता है।

9. साधारण व्यक्तियों की पहचान उनके पद या धन आदि वस्तुओं से नहीं होती है जबकि असाधारण व्यक्ति स्वतः ही एक पहचान होते हैं, पद व वस्तुएँ उनके माध्यम से ही सुशोभित होती हैं।

10. सुख और शांति, निजी आत्म संतोष रूपी गुण की परछाईयाँ हैं । अतः आत्म संतोष के प्रकट होते ही ईर्ष्या, कलह आदि के अंधकार

स्वत: ही नष्ट हो जाते हैं।

11. यदि किसी मनुष्य का तुम उत्थान करना चाहते हो तो उसे साधु पुरुषों की संगति में आसक्त कर दो।

12. प्रभावना रूपी पत्नी के चक्कर में पड़कर साधना रूपी माँ को मत भूल जाना।

13. जब तक पुरुष नारी को माँ के रूप में या बहन के रूप में मानता है तब तक उसका पतन नहीं होता।

14. शत्रु को नहीं, शत्रुता को मारो। शत्रु के मारने से शत्रुता नहीं मरती, शत्रुता के मिटते ही शत्रु मित्रवत् प्रतिभासित होता है।

15. किसी देश, नगर, राष्ट्र व ग्राम की उन्नति, तुच्छ विचार के बड़े व्यक्तियों पर नहीं अपितु उदार विचार के छोटे व्यक्तियों पर निर्धारित है।

16. उपवास का अर्थ मात्र आहार - जल का त्याग नहीं है, इसके साथ - साथ विषय - कषाय, पाप - वासना एवं स्वार्थ का परित्याग कर परमार्थी व आत्म निवासी बनना होता है।

17. किसी भी वस्तु को, व्यक्ति को, धर्म को, यम - नियम संयम को उसकी श्रेष्ठता खुद जानकर ही स्वीकार करो, मात्र किसी की बातों में आकर या लोभ से स्वीकार मत करो।

18. सत्य किसी व्यक्ति विशेष की सम्पत्ति नहीं अपितु वह है जो सबकी सम्पत्ति हो सकता है। जो व्यक्ति विशेष की उपलब्धि है, वह नियम से असत्य है।

19. प्रत्येक व्यक्ति को धार्मिक कार्य कर्त्तव्य मानकर करना चाहिए, फल की आशा से किया गया कार्य पूजा नहीं "व्यापार" होता है।

20. जब कोई कार्य अंतरंग के उत्साह, उल्लास व आनंद के साथ किया जाता है तब उसमें थकान महसूस नहीं होती है।

21. प्रत्येक प्राणी अपने भाग्य का स्वयं विधाता है, अच्छे - बुरे कर्म व फल का वह स्वयं ही पूरी तरह से जिम्मेदार है।

22. अज्ञानी वह है जो अपने दोष दूसरों पर डालता है, ज्ञानी पुरुष वह है जो अपने गुण, दोष खुद संभालता है और स्व से सम्बन्धित प्रत्येक घटना का जिम्मेदार स्व को ही मानता है।

23. साहस, विवेक, धैर्य, एकाग्रता एवं उद्यमशीलता जीवन की रहस्यमयी विद्यायें हैं।

24. जिसे अधिकांश लोग देना चाहते हैं किन्तु लेना विरला पुरुष ही चाहता है उसका नाम है "उपदेश"।

25. मन के मिलाये बिना, मात्र तन के मेल से हुई मित्रता, मित्रता नहीं, एक धोखा है।

26. सत्य के मार्ग में आरूढ़ होकर यह मत देखो कि कौन तुम्हारे विरुद्ध है?

27. गुरु की सेवा, वैय्यावृत्ति,नमस्कार, स्तुति, वंदना आदि नहीं करना इतना बड़ा पाप नहीं है जितना कि उनकी आज्ञा का उल्लंघन करना व निंदा या उपहास करना।

28. यदि तुम सुई के समान नहीं बन सकते तो जीवन में कैंची के समान बनने की कोशिश मत करो, यही तुम्हारे लिए मानव समाज की उचित सेवा है।

29. यदि प्रत्येक मानव मानवता से युक्त हो जाये तो विश्व में शांति अपने आप हो जायेगी।

30. जब तुम दूसरे के दोष देखने के लिए आतुर होने लगो, तब तुम अपनी समीक्षा प्रारंभ कर दिया करो।

31. प्रेम या राग की तीव्रता में एक दूसरे को एक दूसरे के अविद्यमान गुण भी दिखाई देने लगते हैं, ठीक इसी तरह द्वेष की तीव्रता में एक - दूसरे को एक - दूसरे के अविद्यमान दोष दिखाई देने लगते हैं।

सितम्बर

1. संसार में कोई मनुष्य या पदार्थ इतना अच्छा नहीं कि उसमें कोई बुराई ना हो तथा कोई पदार्थ या व्यक्ति इतना बुरा भी नहीं है कि उसमें कोई अच्छाई न हो।

2. सत्य सत्ता से परे है, सत्ता सत्य को दबाकर प्राप्त की जाती है, सत्यार्थी कभी सत्ता नहीं चाहता इसलिए वह कभी सत्ता के पक्ष में नहीं होता है।

3. व्यक्ति जब मन के अच्छे - बुरे विचारों को वाणी से नहीं कह पाता तब शरीर की चेष्टाओं से विचार व्यक्त होते रहते हैं।

4. चिंता सदैव पर या पर के निमित्त से पैदा होती है, चिन्तन सदैव अपना होता है।

5. जहाँ न ज्ञान है और न अज्ञान, वहीं भ्रम की स्थिति पैदा होती है, यह भ्रम अज्ञान से ज्यादा खतरनाक है।

6. प्राकृतिक घटनाऐं कभी मुहूर्त निकाल कर घटित नहीं होतीं, जब घटित हो जाती हैं, तब ज्योतिषी शुभाशुभ मुहूर्त का परिज्ञान करते हैं।

7. यदि आपको अपने भविष्य की चिंता करनी है तो इस भव की नहीं अगले भवों की कीजिए कि मृत्यु के बाद तुम्हारा क्या होगा।

8. तप का अर्थ है, अपनी इच्छाओं पर नियंत्रण करना।

9. जो क्रिया इन्द्रिय से अतीन्द्रिय सुख की ओर ले जाये, वही साधना है।

10. ऐश्वर्यवान व्यक्ति - धीर, वीर, गंभीर, उदार व स्थिर चित्त होते हैं।

11. सच्चे भक्त को तो कष्ट में भी आनंद आता है, क्योंकि उसे उस समय में भी अपने इष्ट की याद आती है।

12. आज तक अंधानुकरण करके कोई महान नहीं बनता है, किंतु

जिसने ईमानदारी के साथ अपना जीवन शुद्ध स्वभाव को प्राप्त किया है, उसका दुनियाँ ने अनुकरण किया है। प्रत्येक महापुरुष अपना रास्ता स्वयं ही बनाते हैं।

13. युद्ध का प्रारंभ जितने उत्साह से होता है, अंत भी उतने पश्चाताप से ही होता है।

14. मनुष्य का सम्यक् व्यवहार वह दर्पण है, जिसमें वह अपना अंतरंग का चेहरा देख लेता है तथा दूसरों को भी निजावलोकन विधि बता देता है।

15. जो व्यक्ति निःस्वार्थ भावना से दूसरों की भलाई करके उसे भूल जाता है, ऐसा व्यक्ति गृहस्थी में रहता हुआ भी महात्मा है।

16. जो व्यक्ति इतिहास को पढ़कर तथा सुनकर भी उससे कुछ सबक नहीं लेते, उन्हें पुनः जीवन में वही इतिहास दोहराना पड़ता है।

17. अस्वस्थ शरीर को आत्मा के लिए कारागार कहें तो, स्वस्थ शरीर को कहना चाहिए, "आत्मा का अतिथि भवन या मंदिर"।

18. अमृत और मृत्यु दोनों इस शरीर में विद्यमान हैं, मोही सदैव मृत्यु से आतंकित रहता है किन्तु सत्यार्थी रहता है अमृत स्नान कर आनंद में निमग्न।

19. अज्ञानी के लिए मौन से श्रेष्ठ कुछ भी नहीं है, वह यदि इस

युक्ति को समझ ले तो अज्ञानी नहीं रहे।

20. ज्ञानी व्यक्ति, अज्ञानी व्यक्ति के मूर्खतापूर्ण प्रश्नों का उत्तर मौन भाषा में ही देता है। यदि वह शब्दों में दे तो वह अज्ञानी ही कहलायेगा।

21. ज्ञान के अहंकार में जीने वाले दुष्ट पुरुष को जीतने के लिए मौन भाषा ही सर्वोत्तम अस्त्र है।

22. जहाँ गुणों की प्रशंसा नहीं होती, वहाँ गुणीजनों का सम्मान कैसे हो सकता है?

23. सत्य की सुरक्षा करना उसी प्रकार कठिन है, जिस प्रकार कि आंधियों के बीच में दीपक को प्रज्वलित बनाये रखना।

24. "क्षमा", केवल वाणी का विलास नहीं अपितु अंतःकरण की निर्मलता के बिना क्षमा करना व क्षमा माँगना मात्र शारीरिक श्रम ही है।

25. प्रसन्नता तो मेंहदी के समान है, दूसरों को बाँटे तो आपके हाथ तो स्वयं ही रच जायेगें।

26. मित्र के लिए जीवन देना इतना कठिन नहीं है जितना कि ऐसे मित्र की खोज करना,"जिसको जीवन दिया जा सके"।

27. असंयम से तन, मन, धन, धर्म व यश का नाश होता है और संयम से इनकी वृद्धि एवं समृद्धि।

28. किसी कार्य को अत्यंत सुन्दर व सार्थक रूप देना चाहते हो, तो उस कार्य को स्वयं करो, दूसरा व्यक्ति उसको अच्छा तो कर सकता है किन्तु आपके मनोनुकूल या आप जैसा नहीं।

29. जीव की जितनी रुचि तन, धन, परिजन की ओर है, यदि उतनी ही सच्चे देव, शास्त्र, गुरु व धर्म की ओर हो जाये तो संसार सिन्धु से बेड़ा पार होने में कोई देर नहीं लगेगी।

30. किसी के द्वारा की गई निंदा व प्रशंसा मात्र से कोई निंदनीय व प्रशंसनीय नहीं होता,निंद्य व प्रशंसनीय कार्य करने से ही निंदनीय व प्रशंसनीय होते हैं।

अरिहंतों को नमस्कार करने से पापों का नाश होता है।
अरिहंतों को नमस्कार करने से ज्ञान का प्रकाश होता है।।
सर्व सुखों का खजाना है अरिहंतों का नमस्कार।
अरिहंतों को नमस्कार करने से ही चेतना (गुणों) का विकास होता है।।

अक्टूबर

1. धन और धनिकों की सेवा, रागी, द्वेषी बनाती है जबकि धर्म व धर्मात्मा की सेवा त्यागी, विरागी व धर्मात्मा बनती है।

2. हजारों शास्त्र पढ़कर अमल न करने की अपेक्षा धर्म का एक वाक्य पढ़कर जीवन में धारण कर लेना अधिक श्रेष्ठ है।

3. यथार्थता को ग्रहण करने वाला भव्य जीव किसी का तिरस्कार नहीं करता।

4. प्रवचन हॉल में बैठ जाने से या मात्र संतों की वाणी कानों से सुनने से, प्रवचन सुनने की सार्थकता नहीं अपितु तुम्हारे अंदर प्रवचन बैठ जायें, तभी प्रवचन सुनने की सार्थकता है।

5. यह आत्मा जब पाप से युक्त होती है तो पापात्मा, पुण्य से युक्त हो तो पुण्यात्मा, धर्म से युक्त धर्मात्मा, महानता से युक्त महात्मा, परमावस्था से युक्त हो तो तब वही आत्मा परमात्मा बन जाती है।

6. अपेक्षावृत्ति दुःख की और उपेक्षावृत्ति सुख की जननी है।

7. धर्म निर्दयी नहीं होता अपितु निर्भय बनाता है।

8. वेतन मात्र में आसक्त सैनिक, वतन की रक्षा नहीं कर सकते।

9. प्रदर्शन प्रवृत्ति दुःखों की मूल है।

10. धर्म के प्रकाश में बुराईयों का अंधकार नहीं टिक पाता।

11. किसी की निंदा, बदनामी, अपकीर्ति करके कोई सत्यानुभूति यथार्थ कीर्ति या परमधाम को प्राप्त नहीं कर सकता।

12. अपनी प्रशंसा व दूसरों की निंदा सुनने में यदि तुमको आनंद आ रहा है तो निःसंदेह दूसरों की प्रशंसा व अपनी निंदा के कारण तुम्हें रोना पड़ेगा।

13. अहो महात्मन् ! सर्वोत्तम त्याग वही है, जिस त्याग में किसी की अपेक्षा न हो, किसी की प्रतीक्षा न हो, किसी से कोई आशा न हो, और न ही किसी से प्रतिस्पर्धा हो।

14. अपेक्षा ही दुःख की जननी है अतः तुम दूसरों से अपेक्षा मत करो।

15. समय पर काम कर लेने वाला व्यक्ति ही समयसार का अभ्यासी है, सदैव समय व व्यक्ति को देखकर व्यवहार करो।

16. गलत धारणा वाला नास्तिक है और सत्य की राह पर चलने वाला आस्तिक है।

17. जो व्यक्ति अपने कर्तव्यों के पालन करने में शिथिल होता है, उसे ही दूसरों से ज्यादा शिकायत होती है।

18. समय का दुरुपयोग करने वाले पुरुष ही समयाभाव की शिकायत किया करते हैं, समय का सदुपयोग करने वाले नहीं।

19. पर से जितने दूर होते जाओगे उतने ही अपने अंदर में पहुँच जाओगे अर्थात् खुद के अंदर जाने का नाम ही शांति प्राप्त करना है।

20. जो कथन सत्य, प्रिय, न्यायसंगत एवं लोकोपकारी है उसे कहने के लिए हर समय उपयुक्त है।

21. कायदे और फायदे में से पहले कायदे का काम करो तो फायदा भी नियम से होगा। वर्णमाला के अनुसार भी 'क' पहले आता है 'फ' बाद में।

22. "मौन" वार्तालाप करने की सर्वश्रेष्ठ, सर्वग्राह्य एवं सुपरिमार्जित कला है प्रायः उत्कृष्ट पुरुष ही उसका उपयोग करते हैं।

23. 'क्षमा' वीर पुरुषों का आभूषण, असहायों का रक्षा कवच, विद्वानों का गुण, साधकों का प्राण, तपस्वियों की नैतिक दिनचर्या है।

24. लोभ के तीव्र उदय में व्यक्ति अपनी मान - मर्यादा, इज्जत और आबरू का भी ध्यान नहीं रखता।

25. यदि सारा विश्व तेरा सम्मान करे और तू आत्मज्ञान से रहित है, तो क्या वह सम्मान तुझे सुख शांति दे सकेगा ?

26. अपने आचरण को पवित्र बनाये बिना,कोई व्यक्ति तुम्हें पवित्रता, सुख व आत्मशांति नहीं दे सकेगा।

27. संसार के किसी भी व्यक्ति और पदार्थ से कुछ नहीं चाहना ही आत्मिक सुख का मूल मंत्र है।

28. संसार मे सबसे दुर्लभ कार्य है - "आत्मा में स्थिरता" उसे प्राप्त करने के उपरांत कोई भी कार्य करने योग्य नहीं रह जाता।

29. कषाय के संस्कारों को दूर करने के लिए बच्चों की तरह भोले - भाले और सीधे - सादे बन जाओ।

30. परेशानी का आशय होता है "पर को अपना स्वामी बना लेना" । (पर + ईशानी) जब तू परेशानी को छोड़कर स्ववश हो जायेगा तो तू स्वयं सुखी हो जायेगा।

31. भजन और भोजन की शुद्धि क्रमशः चेतन व तन को स्वस्थ रखती है।

आचार्यों के चरण ही सद् चारित्र के द्योतक हैं।
आचार्यों के सद् वाक्य ही धर्म के उद्घोषक हैं।।
उन्नति का मार्ग आचार्यों का शुभाशीष ही है।
आचार्यों का आचरण ही मोक्षमार्ग का पोषक है।।

नवम्बर

1. बटोरने में दुःख एवं बाँटने में सुखानुभूति होती है।

2. प्रसन्नता का अर्थ परिणामों की निर्मलता से है न कि चेहरे की बनावटी मुस्कुराहट अथवा अट्टाहास से।

3. जिस प्रकार अंधे पुरुष के हाथ में रखा हुआ दीपक व्यर्थ है, उसी प्रकार विषयासक्त का तत्त्वज्ञान सब व्यर्थ है।

4. सांसारिक पदार्थों की रक्षा हमें करनी पड़ती है किन्तु ज्ञानादि गुण हमारी आत्मा की रक्षा करते हैं।

5. धर्म करने का आशय किसी नियत कार्य को करने से नहीं है, अपितु आत्मा के प्रत्येक प्रदेश का आत्म बोध के प्रकाश से भर जाने का नाम है।

6. इष्ट के वियोग में इतना कष्ट या दुःख नहीं होता, जितना अनिष्ट के संयोग से होता है।

7. वियोग से आत्मा का कल्याण होता है, संयोग से नहीं क्योंकि, कर्मों के वियोग से ही सिद्ध अवस्था प्राप्त होती है, कर्म से सहित प्राणी तो संसारी ही कहलाता है।

8. परोपकार का फल भी स्वोपकार है अतः परोपकार भी वहाँ तक करो जहाँ तक तुम्हारे आत्महित में बाधा न आए।

9. जिस कार्य को आप एकांत में कर रहे हैं, उसे सबके सामने करने में लज्जित, निंदित व अपमानित न होना पड़े, ऐसा कार्य ही श्रेयस्कर कार्य कहलाता है।

10. वीर पुरुष अपनी प्रतिज्ञा को निभाता है, किन्तु कायर पुरुष अपनी प्रतिज्ञा तोड़ने में ही बहादुरी समझता है।

11. धर्मात्मा की सेवा बिना धर्मानुराग असंभव है और धर्मात्मा की

सेवा करने वाला संसार सागर से पार होने का अधिकारी है।

12. कोई तुमसे कडुवे शब्द कहे तो तुम उनसे मीठे शब्द कहो। इससे तुम्हें और सामने वाले को सुखानुभूति होगी।

13. जो पुरुष विषय - कषायों से जितना दूर रहेगा, वह उतना ही धीर, वीर, गम्भीर होगा। कमजोर व्यक्ति विषय - कषायों को जीतने में असमर्थ रहता है।

14. जो आत्मा का प्रत्येक अवस्था में साथ दे या उपकार करे, वही सच्चा मित्र है। ऐसा मित्र धर्म ही हो सकता है, अन्य नहीं।

15. संसार में सबसे बड़ा रोगी पुरुष वही है जो आधि, व्याधि, उपाधि को प्राप्त करके मस्त है तथा उसे छोड़ना भी नहीं चाहता।

16. जो व्यक्ति जितनी ज्यादा खुशामद और चापलूसी करता है या करवाता है, तो उन दोनों को उतना ही ज्यादा परेशान होना पड़ता है।

17. अहो आत्मन् ! अज्ञानी पुरुष अपने आपको कर्त्ता - धर्त्ता भोक्ता मानता है, किन्तु ज्ञानी पुरुष स्वयं को ज्ञाता - दृष्टा रूप जानता और मानता है।

18. लोग कहते हैं संसार बड़ा स्वार्थी है, इससे सिद्ध होता है कि कहने वाला भी इसी श्रेणी में है।

19. शिष्ट और मिष्ट व्यवहार का नाम ही मानवता है। मानवता से रहित मानव उसी प्रकार है, जैसे गंध से रहित पुष्प या घी से रहित दूध।

20. जब - जब अपनी दृष्टि मलिन होती है, तब - तब हमें दूसरों के दोष दिखते हैं। अपनी वृत्ति निर्मल बना लो फिर तुम्हें किसी के दोष नहीं दिखेंगे।

21. अच्छा कार्य करते हुए भी कोई तुम्हें बुरा कहे, बदनाम करे, तब भी तुम्हारी आत्मा का इतना घात नहीं, जितना कि बुरा करने पर अच्छा नाम पाना।

22. तराजू का जो पलड़ा भारी होता है वही झुकता है, इसी प्रकार जो जितना अधिक विशाल व्यक्तित्व का धनी होगा, वह उतना ही अधिक क्षमाशील होगा।

23. कठोरता सदैव तोड़ने का एवं मृदुता सदैव जोड़ने का कार्य करती है। तोड़ना पाप है तो जोड़ना धर्म। अब जो चाहो सो करो।

24. अपनी दृष्टि से तुम निश्छल बनने का पुरुषार्थ करो, दूसरों की दृष्टि में निश्छल बनने से जीवन सार्थक नहीं होगा।

25. सत्य एक ऐसा प्रकाश है जिससे आत्मा के समस्त गुण प्रकाशित हो जाते है, असत्य के अंधकार में कोई भी गुण रूपी निधि प्राप्त होना असंभव है।

26. बिना ब्रेक की गाड़ी, बिना लगाम का घोड़ा, अनुशासनहीन शासक, मूर्खता से युक्त नायक कभी भी नष्ट हो सकते हैं उसी प्रकार आत्म नियंत्रण के बिना प्राणी का पतन अवश्यम्भावी है।

27. यदि संसार में तपस्वी साधक नहीं रहे, तो संसार इन्द्रिय विषयों की इच्छा रूपी भयंकर आग की लपटों से जलकर भस्म हो जायेगा।

28. संसार की किसी भी वस्तु को प्राप्त करना असंभव नहीं है यदि तुम्हारे अंदर तप करने की सामर्थ्य विद्यमान है तो।

29. जिसने पर वस्तुओं को ग्रहण किया है, उसके लिए ही त्याग धर्म का उपदेश दिया जाता है और जो स्वभाव में लीन है, वह तो त्यागी है ही।

30.चित्र की प्रभावना इत्र के समान उड़ जाती है किंतु चरित्र की प्रभावना मित्र की तरह से हमेशा साथ रहती है।

सिद्धों की पूजा से भौतिक ऋद्धि मिलती है।
सिद्धों की पूजा से लोक में प्रसिद्धि मिलती है।।
हर कार्य सिद्ध हो जाता है सिद्धों के ध्यान से।
सिद्धों की उपासना से ही आत्म सिद्धि मिलती है।।

दिसम्बर

1. एक बार जिनेन्द्र भगवान के पूजन करने से आपके लाखों काम सफल सिद्ध हो सकते है किन्तु लाख काम करने से जिन पूजन नहीं हो सकती है।

2. शंका रूपी एक छोटा चूहा भी सम्यक्त्व रूपी विशाल वृक्ष को क्षण भर में धराशायी कर सकता है, अतः अपने सम्यक्त्व को निःषंकित बनाओ।

3. जब तुम किसी को शंका की दृष्टि से देखते हो, तो सामने वाला भी शंका की दृष्टि से देखेगा।

4. कीचड़ में भी कमल खिल जाता है, दीपक में भी कालिमा आ जाती है, उसी प्रकार अपवित्र, मलिन व क्षणध्वंसी शरीर में भी गुणों का, तत्त्वों का व आत्मा का वास होता है।

5. वात्सल्य पाने के लिए अपनी आत्मा को गुणों का सागर बनाओ इसके बिना दूसरों का कोरा वात्सल्य पा लेना अर्थहीन ही है।

6. धर्म का यथार्थ रूप समझे बिना समीचीन धर्म प्रभावना करना असंभव है।

7. विनयशील व्यक्ति अपने प्रति अभद्र व्यवहार करने वालों के प्रति भी विनम्र भाव रखते हैं, अभद्र के साथ में वह अभद्र नहीं होते।

8. गुणी उसी मानव को कहा जाता है, जिसमें गुण हों। गुणों से रहित मानव को गुणी नहीं कहा जा सकता ।

9. संसार में ऐसा कोई भी कार्य नहीं है,जिससे सभी प्राणियों को संतुष्ट किया जा सके, अतः वह कार्य ही श्रेयस्कर है, जिसके माध्यम से आत्म हित हो।

10. पुष्प की कीमत उसकी सुगन्ध से होती है, मात्र सुन्दरता से नहीं, उसी प्रकार मानव की कीमत सच्चरित्र से होती है मात्र ज्ञान से नहीं।

11. जिस प्रकार नमक का खारा पानी पीने से या पानी की कल्पना करने से या उसका नाम लेने से प्यास नहीं बुझती, उसी प्रकार बिना

सम्यक् चारित्र को अंगीकार किये आत्मा का अनुभव नहीं होता।

12. बिना आचरण के ज्ञान निरर्थक ही नहीं अपितु कभी - कभी तो वह अनर्थकारी भी हो सकता है।

13. गुरु की वाणी ही मोक्ष मार्ग में दिशा सूचक बोर्ड है, उनकी चर्या जीवंत मोक्षमार्ग है।

14. आज यदि धरा, अम्बर, जल, वह्नि, मारुत विद्यमान है तो इसका कारण मुनि का यहाँ विद्यमान रहना है। बिना मुनि के यह सब असंभव सा ही है।

15. मयूर की पहचान उसके कोमल पंखों से तथा कोयल की पहचान उसकी मधुर वाणी से होती है, उसी प्रकार सभ्य पुरुष की पहचान शिष्ट आचरण से की जा सकती है।

16. अहंकारी प्राणी के पास गुण उसी प्रकार नहीं ठहरते जिस प्रकार वर्षा का पानी मंदिर के शिखर पर या किसी ठूंठ पर नहीं ठहरता।

17. परिणामों का जल की तरह ही निर्मल होना यथार्थ साधक की पहचान है।

18. पुण्योदय में तो हजारों मित्र बने दिखाई देते हैं, किन्तु पाप के उदय में मित्रता निभाने वाले या साथ देने वाले विरले ही होते हैं।

19. परोपकार बड़े या छोटे नहीं हुआ करते अपितु छोटे भी बड़ों का उपकार करते हैं किन्तु प्रायः बड़े व्यक्ति छोटों के उपकार को भूल जाते हैं।

20. स्वर्ण या रत्न गुम जाने से या नष्ट होने पर पुनः भी प्राप्त हो सकते हैं किन्तु बीता हुआ समय कभी लौटकर नहीं आता।

21. परिणामों की विशुद्धि के बिना देव पूजा, गुरूपासना, व्रत, शील व दान आदि क्रियाऐं पूर्ण सार्थकता को प्राप्त नहीं हो सकती।

22. आज आवश्यकता साधुओं की वृद्धि करने की नहीं है, अपितु साधुता की स्थिति सुधारने की है।

23. आदर्श शिष्य गुरु की परछाई के समान है।

24. शिष्यत्व की परिपूर्णता ही गुरुत्व का प्रथम सोपान है।

25. सहनशील व्यक्ति कभी निंदा, तिरस्कार या पराभव को प्राप्त नहीं होता।

26. चंचल चित्त वाला लोकप्रिय, परआकर्षण का केन्द्र हो सकता है, किन्तु आत्म कल्याण के मार्ग में गतिहीन ही होता है।

27. वृद्ध पुरुष के चेहरे पर पड़ी एक - एक झुर्री में लाखों महत्वपूर्ण अनुभव हैं, तुम उनकी सेवा करके उन्हें प्राप्त करने का पुरुषार्थ करो।

28. संसार - शरीर - भोगों से उनके स्वरूप को जानकर विरक्त हो जाना ही वैराग्य का समीचीन होना है।

29. धर्म जीवन की बला नहीं अपितु स्वभावमय जीवन जीने की कला है। यह चर्चा से नहीं, चर्या से प्राप्त होता है।

30. मोह ही संसार भ्रमण का मूल बीज है । बीज के जल जाने पर वृक्ष की स्थिति असंभव है।

31. आज का मानव दूसरों के अणु बराबर दोषों को सहन नहीं कर पा रहा है जबकि उसमें स्वयं सुमेरू पर्वत के बराबर दोष भरे हैं।

आचार्य विद्यानंद जी देशभूषण जी के नंदन हैं।
द्वादश तप की कसौटी पर परखे शुद्ध कुंदन हैं।।
विश्व धर्म संवाहक राष्ट्रसंत हैं मेरे गुरुवर।
दुनियां के जीव मात्र करते उन्हें नित्य वंदन हैं।।

पुण्यार्जक श्रावक

श्रीमती मीना जैन धर्म पत्नी विरेन्द्र कुमार जैन
रितेश जैन'अंकुर जैन
अरहंत ज्वैलर्स थापर रोड मेरठ उ.प्र.
के सौजन्य से 500 प्रतियाँ प्रकाशित

सुभाष चंद्र रविन्द्र कुमार जैन
रितेश जैन'अंकुर जैन
विभवनगर फिरोजाबाद उ.प्र.
के सौजन्य से 500 प्रतियाँ प्रकाशित

पुण्यार्जक श्रावक

राजीव जैन

संगम विहार दिल्ली

के सौजन्य से

1500 प्रतियाँ

प्रकाशित